12

एलिय्याह

परमेश्वर की एक आदमी की सेना

वचन पाठः 1 राजाओं 16:29-22:40

कुछ ही समय पहले मैंने यह टिप्पणी सुनी है, ''संसार ने अभी देखा नहीं कि परमेश्वर एक ही व्यक्ति के द्वारा, जो उसके प्रति पूरी तरह समर्पित हो, क्या कर सकता है।''

हां, देखा भी है और नहीं भी। बेशक यह कहने का एक अर्थ है, क्योंकि कोई भी मानवीय जीव चाहे वह कितना भी पवित्र क्यों न हो, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति को कभी हरा नहीं सकता। परन्तु एक अर्थ में हम कह सकते हैं कि यह दावा किसी भी प्रकार सही नहीं है। बीच-बीच में कोई न कोई विश्वासी जन हमें यह दिखाने के लिए उठ ही जाता है कि परमेश्वर उस अकेले व्यक्ति के द्वारा क्या कुछ कर सकता है, जो किसी भी कीमत पर तन-मन से हर प्रकार की आलोचना के बावजूद वफ़ादारी से उसके साथ चलना चुनता है। हनोक (उत्पत्ति 5:22), मूसा (व्यवस्थाविवरण 34:10), एलिय्याह (2 राजाओं 2:12) और पौलुस (प्रेरितों 26:16-18) उन के कुछ उदाहरण हैं, जो परमेश्वर के वचन में सपाट मैदान के विपरीत बर्फ से लदे पहाड़ों की तरह खड़े हैं।

इस्राएल के अगुओं में से सीखना जारी रखते हुए इन आत्मिक डायनमों में से एक एलिय्याह पर चर्चा करना आवश्यक है। जैसा किसी ने कहा है कि वह पवित्र शास्त्र के पृष्ठों पर ''तूफ़ान में'' आता है और ''बवंडर में'' चला जाता है। अहाब के दरबार के बीच में मूर्तिपूजा की निंदा और सूखे की भविष्यवाणी करते हुए वह बिजली की तेज़ी से टूट पड़ा।

बाइबल में उसे ''हमारे समान दुख-सुख भोगी मनुष्य'' (याकूब 5:17) कहा गया है; तौ भी बिना शक के वह पुराने नियम के भविष्यवक्तओं के सबसे बड़े नबियों में से, पक्की निष्ठा वाला, अथक आज्ञाकारिता वाला और परमेश्वर द्वारा दिए गए काम को करने के लिए दृढ़ संकल्प आदमी था।

उस विपरीत माहौल के कारण, जिसमें परमेश्वर ने उसे भेजा था, उसने प्रेम की सुन्दरता और सामर्थ या सकारात्मक सोच के महत्व पर लम्बे संदेश नहीं दिए; बल्कि उसने सच्चाई का अधिकार आश्चर्यकर्मों से दिखाया। उसने कोई नया प्रकाशन नहीं लाया, बल्कि उसी प्रकाशन की रक्षा की जो पहले ही दिया गया था। वह शिक्षक नहीं, बल्कि एक सुधारक था यानी कोई स्थानीय सुसमाचार प्रचारक नहीं, बल्कि घुम्मकड़ प्रचारक था।

उसका जीवन, परमेश्वर के साथ उसका चलना इतना प्रभावशाली था कि परमेश्वर ने उसे

मौत का स्वाद चखाए बिना आग के रथ में अपने साथ रहने के लिए अपने घर में उठा लिया। सचमुच वह गर्जन की आवाज़ की तरह आया, पूरे इस्राएल में आग की तरह फैल गया और एक बवंडर में घर में उठा लिया गया।

वह इस्राएल के इतिहास के संकट भरे समय में परमेश्वर की एक आदमी वाली सेना था। बद्र अहाब और दुष्ट ईज़ेबेल ने लगभग पूरे इस्राएल को बाल की पूजा में लगा दिया था। पूरी कौम आत्मिक मृत्यु शय्या पर थी। मूर्तिपूजा के अधरंग से गम्भीरता पूर्वक पीड़ित इस्राएल ही नहीं था, यह खतरनाक बीमारी यहूदा में भी फैल रही थी। परमेश्वर का भय मानने वाले लोग मुश्किल से मिलते थे। यहोवा की आराधना सच्चाई से करने वाले को ढूंढ़ने की कोशिश करना कीचड़ भरे खेत में से छोटा मोती ढूंढ़ने की तरह था। दृश्य पर इस्राएल का भविष्य किसी साहसी व्यक्ति द्वारा आकर इसे बदलने पर निर्भर था, जो मजबूत, दुष्टता की उठती लहरों के विरुद्ध खड़ा होने के लिए आत्मिक दीवार बनने वाला सबसे अलग व्यक्ति हो। इस्राएल को ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी, जो सच्चाई के लिए दृढ़ता से खड़ा हो सके क्योंकि दूसरे सब उससे फिर गए थे। परमेश्वर ने वह आदमी होने के लिए एलिय्याह को चुना और एलिय्याह ने विनम्रतापूर्वक आज्ञा मानते हुए उसके निर्णय को मान लिया।

अपने लोगों को अपने पास लाने का परमेश्वर का ढंग हमेशा लोगों का इस्तेमाल ही रहा है, जो साधारण लोग नहीं, बल्कि पवित्र लोग हों। ऐसे लोगों के लिए कठोर अनुशासन से चलना और उन मूल्यों से परहेज़ आवश्यक होता है, जिन्हें संसार सम्मान देता है। परमेश्वर के साथ उनकी निष्कपट संगति उन्हें ताजी हवा की आत्मिक सांस बना देती है, जो देश में फैले पाप और मूर्तिपूजा के कूड़े के ढेरों की बदबू को भगा देती है।

एलिय्याह तिशबी जो शायद गलील के तिशबे में जन्मा पर गिलाद में रहता था (1 राजाओं 17:1)। उसने चमड़े का वस्त्र या ऊंठ के रोएंदार बाल पहने, जो उसने अपने धूप से जले कंधों पर ओढ़ लिए और कमर पर चमड़े का फैंटा बान्ध लिया (1 राजाओं 19:13; 2 राजाओं 1:8)। वह शक्तिशाली और दिलेर आदमी था, जो तगड़ा, कठोर, स्वतन्त्र और निराला था। उसके पास कोई सामान नहीं था, जिससे वह एक जगह रह सके, इसलिए हम उसे फुर्ती से दूर-दूर तक जाते, अचानक दिखाई देते और फिर अलोप हो जाते देखते हैं। भविष्यवाणी की उसकी सेवकाई 918-897 ई.पू. के इक्कीस वर्ष के दौरान की थी।

उस निराले युग में, जिसमें एलिय्याह रहा, दूत की ही नहीं, बल्कि आश्चर्यकर्मों की भी आवश्यकता थी।[1] एलिय्याह की सेवकाई के दौरान होने वाली अलौकिक घटनाएं छुटकारे के इतिहास के हमारे आश्चर्यकर्मों के दूसरे काल[2] की हैं। आश्चर्यकर्मों की यह शृंखला यहोवा के धर्म और बाल की पूजा के बीच चल रहे जीवन-मरन के संघर्ष में आश्वयक थी। परमेश्वर की व्यवस्था से उत्तरी राज्य के लोगों की वफ़ादारी ने उन पर एक बड़ा मुद्दा प्रकट किया था। जेम्स ई.स्मिथ ने इस्राएल का वर्णन इतिहास की इस घटना में इस प्रकार किया है:

> इस युग में दूत की आवश्यकता थी; ऐसा दूत जिसकी अपनी विश्वसनीयताएं हों; वे विश्वसनीयताएं केवल आश्चर्यकर्म हो सकती थीं। एलिय्याह और एलिशा द्वारा दिखाए गए शक्तिशाली आश्चर्यकर्मों जैसे आश्चर्यकर्म ही ईज़ेबेल और उसके साढ़े आठ सौ

> याजकों और भविष्यवक्ताओं के प्रभाव का मुकाबला करने के लिए काफी हो सकते थे। सबसे बड़े भविष्यवक्ता को सबसे बुरे युग के लिए रखा जाता है।[3]

एलिय्याह परमेश्वर का जन था, जिसने अपने आप को संकट में डाल दिया। वह न होता तो इस्राएल में परमेश्वर का कार्य खत्म हो सकता था।

एलिय्याह परमेश्वर के सबसे महान लोगों में से एक था, इसलिए हम पूछना चाहते हैं कि ''उसका दिल कैसा था?'' बिना दिल को देखें हम वास्तव में नहीं जान सकते कि कोई व्यक्ति कैसा है। बड़े लोगों के दिल स्पष्टतया बड़े होते हैं। वे अन्दर से बाहर आते हैं न कि बाहर से अन्दर। महानता मांसपेशियों के उभार से नहीं, बल्कि निष्ठावान सोच से बढ़ती है। असली ताकत मन की शक्ति से मिलती है न कि व्यायाम से।

एलिय्याह के बारे में लिखी आठ घटनाओं से हमें उसके आत्मिक दिल का एक्स-रे मिलता है। इन घटनाओं को देखकर हम इस बात को समझ सकते हैं कि परमेश्वर की एक आदमी वाली सेना बनने के लिए क्या आवश्यक है।

मन का गुणः चरित्र

एलिय्याह के दिल के मूल्यांकन की पहली बात परमेश्वर के साथ उसका एक होना अर्थात उसकी आत्मिकता है। उसका चरित्र असल था, ऐसा चरित्र जो परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध से ही बनता है। उसका जीवन अपने नाम के अर्थ ''मेरा परमेश्वर यहोवा है'' के अनुसार था। अन्य शब्दों में वह यहोवा का सेवक था।

एलिय्याह के बारे में यह सच्चाई उसके प्रार्थना से भरे जीवन और प्रतिदिन परमेश्वर के साथ चलने से बनती है। वह परमेश्वर को जानता था, परमेश्वर की बातें करता था और परमेश्वर के साथ रहता था। कई बार शारीरिक संगति न होने के बावजूद वह स्वर्गीय संगति से विहीन नहीं रहा। वह केवल परमेश्वर *की* बातें ही नहीं करता था, परमेश्वर *से* भी बातें करता था। वह केवल परमेश्वर के बारे में ही नहीं सोचता था बल्कि उसने सबसे महान मित्र अर्थात स्वर्ग के परमेश्वर के साथ इस संसार में से अपना रास्ता बनाया।

अपनी पत्नी ईज़ेबेल के प्रभाव में अहाब सोर के देवता बाल की पूजा में घिर गया था। इस संकट भरे समय में एलिय्याह ने उसके सामने प्रकट होकर यहोवा को ठुकराने के लिए उसके दण्ड के रूप में सूखे की भविष्यवाणी की (17:1)। उस अकाल के कारण एलिय्याह पहले तो करीत नामक नाले में चला गया, जहां कौवे उसे भोजन लाकर देते थे (17:6)। नाले के सूख जाने पर उसे सोर के उत्तर में भूमध्य सागर के तट पर सारपत में जाने के लिए कहा गया (17:9)। उसे एक विधवा के पास जाने के लिए कहा गया, जिसने उसे खाने को देना था। अकाल के कारण जब वह विधवा पानी और रोटी देने से कतरा रही थी, तो उसने उसे परमेश्वर में विश्वास रखने और भरोसा करने के लिए कहा था।

> मत डर; जाकर अपनी बात के अनुसार कर, परन्तु पहिले मेरे लिए एक छोटी सी रोटी बनाकर मेरे पास ले आ, फिर इसके बाद अपने और अपने बेटे के लिए बनाना। क्योंकि

> इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि जब तक यहोवा भूमि पर मेंह न बरसाएगा, तब तक न तो उस घड़े का मैदा समाप्त होगा, और न उस कुप्पी का तेल घटेगा (17:13, 14)।

एलिय्याह की अगुआई में उस विधवा ने परमेश्वर पर भरोसा किया और अपना पानी और रोटी का अन्तिम टुकड़ा उसके साथ साझा किया। परमेश्वर ने देखा कि अनाज का उसका बर्तन और तेल की कुप्पी अकाल के खत्म होने तक भरी रहे (17:15, 16; लूका 4:24-26)। एलिय्याह की सेवकाई की इन विशेष घटनाओं के दौरान परमेश्वर के साथ इस नबी के गूढ़ सम्बन्ध से स्तब्ध हुए बिना रहा नहीं जा सकता।

जब उस विधवा का पुत्र मर गया तो उसने यह निष्कर्ष निकाला कि उसकी मौत मेरे किसी पाप के कारण हुई होगी (17:18)। एलिय्याह उस लड़के को गोद में लेकर अटारी में ले गया और उसे जिला देने के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए प्रार्थना करने लगा। वचन की मूर्त के द्वारा परमेश्वर हमें उस लड़के को जीवन देने के लिए एलिय्याह के प्रार्थना करने को देखने की अनुमति देता है। कितना नाटकीय दृश्य है यह! परमेश्वर ने एलिय्याह की प्रार्थना सुनी और उस लड़के का प्राण लौटा दिया।

> एलिय्याह की यह बात यहोवा ने सुन ली, और बालक का प्राण उस में फिर आ गया और वह जी उठा। तब एलिय्याह बालक को अटारी पर से नीचे घर में ले गया, और एलिय्याह ने यह कहकर उसकी माता के हाथ में सौंप दिया, कि देख तेरा बेटा जीवित है। स्त्री ने एलिय्याह से कहा, अब मुझे निश्चय हो गया है कि तू परमेश्वर का जन है, और यहोवा का जो वचन तेरे मुंह से निकलता है, वह सच होता है (17:22-24)।

इस आश्चर्यकर्म की घटना से जैसे हम सब देख सकते हैं, उस स्त्री को एलिय्याह की दो सच्चाइयों की समझ आई कि एलिय्याह का जीवन प्रामाणिक चरित्र और एलिय्याह की कही बातें ईश्वरीय हैं।

सबसे बढ़कर एलिय्याह हमें सिखाता है कि आत्मिकता के लिए कोई विकल्प नहीं है। कोई आदमी डॉक्ट्रिन में बंदूक की नाली की तरह सीधा हो सकता है, परन्तु आत्मिक तौर पर बंदूक की नाली की तरह खाली भी। क्या आप उस व्यक्ति से जो दूसरों को प्रचार कर रहा हो, परन्तु स्वयं परमेश्वर को न जानता हो, यानी परमेश्वर के साथ न चलता हो, तरसयोग्य व्यक्ति किसी और को मान सकते हैं? यह सच है कि कई बार प्रचारक होने के बावजूद परमेश्वर दूसरों को मसीह में लाता है, परन्तु यह नियम नहीं, अपवाद है। आत्मिक निर्णय जो उद्धार की योजना की तरह ही पक्का होना चाहिए कि वह यह है कि मैं दूसरों की आत्मिक आवश्यकताओं को "पूरा करने" की कोशिश से पहले अपनी "भूख मिटाऊं" (1 तीमुथियुस 4:16)।

बैट्सेल बैरट बैक्स्टर की पत्नी ने कहा कि वह रोज़ सुबह पांच बजे उठते, अध्ययन में लग जाते और दिन भर के अपने काम के लिए प्रार्थना करते। वह तीन काम करते थे: वह डेविड लिप्सकौंब यूनिवर्सिटी में बाइबल विभाग के प्रमुख, हिल्सबोरो चर्च ऑफ़ क्राइस्ट के पुलपिट प्रीचर और "हैरल्ड ऑफ़ ट्रुथ" टीवी और रेडियो कार्यक्रमों के प्रमुख वक्ता थे। मसीही भाईचारे

में उन्हें बीसवीं सदी के श्रेष्ठतम प्रचारकों में से एक माना जाता था। उन्हें इतना प्रभावशाली किस बात ने बनाया? क्या यह केवल उनकी योग्यता थी? उनमें योग्यता थी, इसमें कोई शक नहीं है। वह डाक टिकट के बारे में इतनी गम्भीरता और भावुकता से बात कर सकते थे कि सुनने वालों की आंखें भर आतीं। वह ''मैसोपोटामिया'' इस प्रकार कह सकते थे कि लोग ''हैलेलुय्याह'' कहने से अपने आप को रोक न पाते! परन्तु जो लोग भाई बैक्स्टर को जानते थे, उन्हें मालूम था कि उनकी यह सामर्थ उनकी स्वाभाविक और ग्रहण की गई योग्याताओं में नहीं, बल्कि इस वास्तविकता में थी कि वह परमेश्वर का जन था।

मार्शल कीबल के जीवन के अन्तिम भाग में, विली केटो ने इस महान सुसमाचार प्रचारक के साथ सफ़र किया। भाई कीबल अपने जीवन के दौरान लगभग चालीस हज़ार लोगों को मसीह में लाने में सफल रहे थे। भाई केटो ने कहा कि सफ़र में रात पड़ने पर जब वे किसी सराय में रुक जाते तो भाई कीबल इस बात पर ज़ोर देते थे कि वे सोने से पहले अपने बिस्तर के पास घुटनों के बल प्रार्थना करेंगे। उन्होंने और बताया कि रात में नींद खुल जाने पर भाई कीबल बिस्तर में फिर जाने से पहले फिर से घुटनों के बल होकर प्रार्थना करते। भाई केटो ने कहा, ''वह जितनी बार भी बिस्तर से उठते, अपने बिस्तर के पास घुटनों के बल प्रार्थना किए बिना बिस्तर पर नहीं जाते थे।''

परमेश्वर का भय मानने वाले लोग अलग-अलग समयों और अलग-अलग जगहों में प्रार्थना करते हैं, परन्तु उन सबमें एक बात सामान्य है कि वे लगातार और विश्वास से प्रार्थना करते हैं। उन्हें अपनी सामर्थ परमेश्वर में मिलती है। जैसा कि चार्ल्स हॉज ने हमें याद दिलाया है कि ''उनका विश्वास प्रार्थना में नहीं, बल्कि परमेश्वर में है।'' उनका विश्वास उपासनाओं में नहीं, बल्कि परमेश्वर की उपासना में है। परमेश्वर के सहकर्मियों के रूप में वे परमेश्वर के साथ चलते और काम करते हैं।

दिल का गुण: विश्वास

दिल का एक और गुण एलिय्याह में देखा जाने वाला विश्वास है। वह प्रश्न चिह्न वाला मनुष्य नहीं था, जो यही सोचता रहता हो कि वह क्या विश्वास करता है, बल्कि वह विस्मयादि बोधक बिन्दु था। वह अपने विश्वास केद्वारा हिलाया गया था; अपने विश्वास के द्वारा वह इतना हिलाया गया था कि वह इससे कुछ करना चाहता था। राजा अहाब से बात करते हुए एलिय्याह के दृढ़ विश्वास पर ध्यान दें: ''इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूं, उसके जीवन की शपथ इन वर्षों में मेरे बिना कहे, न तो मेंह बरसेगा, और न ओस पड़ेगी'' (17:1)।

याद रखें कि अहाब राजा था और उसे एलिय्याह के जीवन और मृत्यु पर अधिकार था! जब हमें यीशु के बारे में बताने के लिए मित्रों के पास भेजा जाता है तो हम घबराते और कांप जाते हैं। हो सकता है कि हमें मन ही मन आशा हो कि वे घर में न हों। किसी राजा को विशेषकर जिसकी पत्नी ईज़ेबेल जैसी हो, डांटने के लिए कहा जाने पर कैसा लगेगा? कम से कम कहें तो परमेश्वर की सच्चाई से मजबूत हुआ फौलाद का सीना होना आवश्यक है।

बाद में अपनी सेवकाई में एलिय्याह ने एक दस्तावेज लिखा, जिसमें उसने यहूदा के यहोराम को सम्बोधित किया, जो यहोशाफात के साथ मिलकर एक खतरा था। अपने दस्तावेज में उसने

ईश्वरीय न्याय के साथ यहोराम को यहोशाफात के जीवनकाल में किए गए पापों के लिए ही नहीं बल्कि यहोशाफात के मरने के बाद उन हत्याओं के लिए भी डांटा जो उसने की थीं।

> तब एलिय्याह नबी का एक पत्र उसके पास आया, कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि तू जो न तो अपने पिता यहोशापात की लीक पर चला है और न यहूदा के राजा आसा की लीक पर, वरन इस्राएल के राजाओं की लीक पर चला है, और अहाब के घराने की नाईं यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों से व्यभिचार कराया है और अपने पिता के घराने में से अपने भाइयों को जो तुझ से अच्छे थे, घात किया है, इस कारण यहोवा तेरी प्रजा, पुत्रों, स्त्रियों और सारी सम्पत्ति को बड़ी मार से मारेगा। और तू अंतड़ियों के रोग से बहुत पीड़ित हो जाएगा, यहां तक कि उस रोग के कारण तेरी अंतड़ियां प्रतिदिन निकलती जाएंगी (2 इतिहास 21:12-15)।

एक बार फिर ऐसा पत्र लिखने के लिए आवश्यक दृढ़ विश्वास पर विचार करें।

कुछ साल पहले बेन बेरी ने अपने नगर में से नंगी तस्वीरों को हटाने के लिए सरसी, आरकैंसा की कलीसियाओं की अगुआई की। कई लोग इस काम को करने के लिए उनके साथ जुड़ गए, परन्तु इन सब को आरम्भ करने के लिए एक ऐसे आदमी की आवश्यकता थी, जो दुकानों पर लगे समाचार पत्र-पत्रिकाओं के स्टाल में से गन्दगी निकालने के लिए कृतसंकल्प हो। वह मण्डलियों के सामने खड़े होकर इसे समझाते, बताते कि इससे लोगों के मन पर क्या असर पड़ता है और फिर अपने नगर में से इस कूड़े को निकालने के लिए रूपरेखा बनाते। हम में से शेष लोग उनके द्वारा हमें कुछ करने की चुनौती देने पर उनसे सहमत हो जाते, परन्तु यह काम हमने पहले क्यों नहीं किया? उत्तर आप जानते हैं, दृढ़ विश्वास की कमी! बेन को यह बुरा लगता था, पर हमें नहीं। मुझे खुशी है कि उसने हमें इस प्रकार अगुआई दी कि हम इसका कुछ करने का सोचने लगे।

इस्राएल में बालवाद की विपत्ति से निपटने के लिए परमेश्वर के पास ऐसा व्यक्ति होना आवश्यक था, जो यह मानता हो कि किसी भी सच्चे इस्राएली द्वारा मूर्तियों की पूजा को सहन नहीं किया जा सकता। उसका विश्वास इतना मजबूत होना चाहिए कि वह दूसरों के सामने, चाहे वह राजा ही हो बिना किसी पक्षपात के, परमेश्वर की सामर्थ से खड़ा हो सके। वह धन, मानवीय योग्यता, करिश्मा या सांसारिक शिक्षा से किसी प्रकार भरमाया न जा सके। क्रान्ति परमेश्वर की दिखाई गई सच्चाई से ही आनी थी, किसी और बात से नहीं। जब परमेश्वर ने एलिय्याह पर ज़िम्मेदारी का यह लबादा रख दिया और कहा कि ''जाकर उन्हें दिखा'' तो एलिय्याह में इसे करने का दृढ़ विश्वास था।

दिल का गुणः दिलेरी

एलिय्याह के दिल की एक और विशेषता उसकी दिलेरी थी। दिलेरी की गहराई और सामर्थ दृढ़ विश्वास के चश्मे से मिलती है। यदि किसी बात पर आपका विश्वास ही नहीं है तो इसके काम के लिए आप में दिलेरी क्यों होगी? यदि दिलेरी दृढ़ विश्वास से नहीं निकली तो यह एक सनकी, अविचारी जोश है, जिसका कोई उद्देश्य नहीं। एलिय्याह के पास हिम्मत और उद्देश्य दोनों

थे। यहोवा परमेश्वर में गहरे विश्वास के पीछे उसकी दिलेरी और इस्राएल को यहोवा की आराधना में वापस लाने की आवश्यकता पर ध्यान था।

लगभग $3^{1/2}$ के सूखे के बाद (1 राजाओं 18:1; लूका 4:25; याकूब 5:17) एलिय्याह को अहाब के पास जाने के लिए कहा गया। कर्मेल पहाड़ वाले दृश्य के बाद मुकाबला हुआ यानी परमेश्वर और बाल के बीच लड़ाई हुई। बाल के पुजारी दिनभर नाचकर और कर्मकांडों के द्वारा बाल को सच्चा साबित करने की कोशिश करते रहे, परन्तु वे बुरी तरह नाकाम रहे। वे अपने विश्वास में नहीं, केवल लोगों के तरस और ठुकराए जाने में सफल हुए।

फिर एलिय्याह ने परमेश्वर की प्राचीन वेदी के आस-पास लोगों को इकट्ठा किया। यह वेदी सम्भवतया उत्तर के भक्त इस्राएलियों द्वारा दस गोत्रों द्वारा उन्हें यरूशलेम में आराधना करने के लिए जाने से रोकने की कमी को पूरा करने के लिए बनाई थी। किसी ने इसे तोड़ दिया था। एलिय्याह ने बारह पत्थर लेते हुए उसकी मरम्मत की, इस प्रकार उसने खामोशी से यह साबित किया कि बारह गोत्रों का दो राज्यों में विभाजन परमेश्वर की ईश्वरीय इच्छा के अनुरूप नहीं था (18:31)। हेराफेरी की हर सम्भावना को खत्म करने के लिए उसने लोगों को बलिदान और वेदी को पानी से तर करने को कहा। सब तैयारियां कर लेने के बाद उसने प्रार्थना में परमेश्वर को पुकारा। आग गिरी, जिससे बलिदान भस्म हो गया और वेदी भी नष्ट हो गई। यहोवा ने अपने अस्तित्व, अपनी वास्तविकता और सामर्थ को साबित कर दिया था। धोखबाज़ साबित होने के बाद बाल के भविष्यवक्ताओं को पहाड़ के नीचे किशोन के नाले पर ले जाया गया और एलिय्याह के कहने पर कत्ल कर दिया गया (18:1-40; व्यवस्थाविवरण 17:2-5)।

लोगों ने यहोवा को मान लिया था और यहोवा के नबी की आज्ञा मान ली और परमेश्वर के प्रत्युत्तर का संकेत बादलों के इकट्ठा होने में देखा गया था। देश के हाकिम के रूप में राजा के प्रति सम्मान दिखाने के लिए एलिय्याह ने अपनी कमर बान्ध ली और यिज्रेल के फाटक तक अहाब के रथ के आगे-आगे पूरे ज़ोर के साथ भागा (18:41-46)।

क्या आप एलिय्याह की हिम्मत की दाद नहीं देते? वेदी की मरम्मत करने, बलिदान तैयार करने और आग गिराने के लिए प्रार्थना करने के उसके शान्तमय ढंग की कल्पना करें। इसी को दिलेरी कहते हैं। यह सही दिलेरी है, जो समर्पित और आत्मिक हिम्मत है। एलिय्याह ने नासमझी वाला साहस नहीं, बल्कि वह साहस दिखाया, जो जीवित परमेश्वर में विश्वास रखने से मिला। अवसर से मिले प्रमाण और नबी की दृढ़ता का सामना करने के लिए कौन उस पहाड़ पर खड़ा रह पाया होगा? जो वहां रहे होंगे, अवश्य ही उनके दिल पत्थर के होंगे!

अपने भविष्यवक्ताओं के सर्वनाश से भड़की ईज़ेबेल ने एलिय्याह को मार डालने की शपथ ली, जो होरेब पहाड़ पर चला गया था। मूसा की तरह वहां उसे चालीस दिन और चालीस रात तक ईश्वरीय संरक्षण मिला (निर्गमन 24:18; 34:28; व्यवस्थाविवरण 9:9, 18; 1 राजाओं 19:8)। इस दौरान हम एलिय्याह को सबसे बुरी हालत में देखते हैं। वह झाऊ के पेड़ के नीचे बैठकर परमेश्वर से उसकी जान ले लेने के लिए कहने लगा। अत्यधिक निराशा और हताशा में उसे लगा कि जो कुछ वह कर सकता था, उसने वह सब किया है, परन्तु फिर भी सफल नहीं हुआ। वह "अपनी रस्सी के किनारे" पर था। परमेश्वर ने उसे उसकी हताशा के लिए प्यार से डांटा (19:9), उसे एक झलकी दी कि उसके आगे की सेवकाई कैसी होगी (19:13), और वापस

काम पर भेज दिया। उसने एलिय्याह को कहा कि हजाएल को अराम का राजा, येहू को इस्राएल का राजा और एलीशा को मूर्तिपूजा की बुराई से देश को छुड़ाने में अपने सहायक के रूप में अपना साथी नियुक्त करे (19:15-18)।

एलिय्याह ने तुरन्त जाकर एलीशा को ढूंढ़ा। उस पर अपनी चादर डालते हुए एलिय्याह ने उसे काम करने के लिए बुलाया और परमेश्वर द्वारा उसे दिया गया काम सौंप दिया (19:19-21)। एलिय्याह द्वारा किए जा रहे काम को करने के लिए हिम्मत चाहिए थी।

नाबोत और उसके पुत्रों की न्यायिक हत्या के लिए ईज़ेबेल को यहोवा के आने वाले बदले की घोषणा करने के लिए नाबोत की दाख की बारी में राजा अहाब से मिलने के लिए एलिय्याह ने हिम्मत दिखाई थी (21:20-24)। कमज़ोर दिल वाला ऐसा काम नहीं कर सकता था। दिलेर, आत्मिक फौलादी एलिय्याह ने जाकर अहाब की आंखों में झांका और शायद बिना किसी तरकश के परमेश्वर के न्याय की घोषणा कर दी।

> जिस स्थान पर कुत्तों ने नाबोत का लोहू चाटा, उसी स्थान पर कुत्ते तेरा भी लोहू चाटेंगे। ... मैं तुझ पर ऐसी विपत्ति डालूंगा, कि तुझे पूरी रीति से मिटा डालूंगा; और अहाब के घर के एक एक लड़के को और क्या बन्धुए, क्या स्वाधीन इस्राएल में हर एक रहने वाले को भी नाश कर डालूंगा। ... और ईज़ेबेल के विषय में यहोवा यह कहता है, कि यिज्रेल के किले के पास कुत्ते ईज़ेबेल को खा डालेंगे (21:19-23)।

एलिय्याह द्वारा की गई घोषणा चेतावनी नहीं थी, बल्कि यह सच्ची बात थी। तीन साल बाद गिलाद के रामोत की लड़ाई में अहाब के मरने से न्याय की वह भविष्यवाणी पूरी होने लगी, जो शाही परिवार के विरुद्ध एलिय्याह ने की थी (22:1-38)।

हां, एलिय्याह गजब का दिलेर था। इन विवरणों को पढ़ने वाला कोई व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जिसे उसकी बहादुरी दिखाई न दें। आरार के पेड़ के नीचे अपनी निराशा के अपवाद के साथ उसने एक शक्तिशाली, निर्भय और बहादुर व्यक्ति के रूप में बाल के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया।

प्रचार करने के लिए किसी के खड़ा होने से पहले कई बार भाई प्रार्थना करते हैं, ''हे परमेश्वर, हमारा भाई बिना भय या पक्षपात के, यीशु के क्रूस के पीछे खड़ा होकर तेरे सुसमाचार का प्रचार कर सके।'' ''भय या पक्षपात'' शब्दों का इस्तेमाल मुझे नहीं पता कि सबसे पहले किसने किया होगा, जिसने भी किया हो उसने बड़ा सही विचार दिया है। सुसमाचार का सच्चा प्रचारक किसी विशेष समूह का पेट भरने के लिए प्रचार नहीं कर सकता क्योंकि उसे लोगों को ''परमेश्वर यूं कहता है'' बताते हुए दृढ़ता से प्रचार करना आवश्यक है। बिना दिलेरी के प्रचारक ऐसा है, जैसे बिना रीढ़ की हड्डी के आदमी!

सारांश

अब तक हमें यह मान लेना चाहिए कि परमेश्वर चरित्र, दृढ़ विश्वास और दिलेर लोगों का इस्तेमाल करता है। ई. एम. बाउंस ने लिखा है कि परमेश्वर बेहतर ढंगों की तलाश नहीं कर रहा, वह तो बेहतर लोगों की तलाश में है। जब परमेश्वर ने आत्मिक परिदृश्य बदलना चाहा तो उसने स्वर्गदूतों की सेना नहीं बुलाई, बल्कि एक आदमी को यह काम सौंपा। वह कोई साधारण आदमी

नहीं था; वह तो तगड़ा, आत्मिक सिपाही एलिय्याह था, जो उस समय भी परमेश्वर के साथ चलता था, जब अधिकतर लोगों ने बाल के आगे घुटने टेक दिए थे। वही था, जिसने शक्ति, पीड़ा या प्रसिद्धि से नहीं डरना था, बल्कि जिसने परमेश्वर का साहसी जन होना था, जबकि दूसरों के मन भय के कारण डोल गए थे। एलिय्याह ने वह सब कुछ प्राप्त नहीं किया, जो किया जाना आवश्यक था, परन्तु परमेश्वर ने उसको कौम का जीवन बदलने के लिए इस्तेमाल किया। वह एक समय के लिए एक आदमी वाली परमेश्वर की सेना था। पुराने नियम के विद्वान इस बात से सहमत हैं कि परमेश्वर ने प्राचीन इस्राएल में आत्मिकता का नया दिन लाने के लिए एलिय्याह को इस्तेमाल किया।

आदमी के रूप में एलिय्याह की खूबी को न भूलें। मूसा और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बीच में शायद ही कोई उसके बराबर का नबी हो। उसे आदर मिला, बिना मरे स्वर्ग में उठा लिए जाने वाला हनोक के बाद वही था (उत्पत्ति 5:24)। अपने सहायक एलीशा के साथ यरदन नदी के पूर्व में जाते हुए उसे एक रथ और आग के घोड़े दिखाई दिए। परमेश्वर ने एलिय्याह को नबियों से अलग करते हुए उनकी आत्माएं स्वर्गलोक में दोबारा मिलने तक, बवंडर में से स्वर्ग में उठा लिया (2 राजाओं 2:1-12)।

पुराने नियम की अन्तिम दो आयतों में भविष्यवाणी थी कि प्रभु के बड़े और भयानक दिन के आने से पहले परमेश्वर एलिय्याह को भेजेगा (मलाकी 4:5, 6)। नया नियम इस बात की व्याख्या करता है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले में यह भविष्यवाणी पूरी हुई, जो साधारण वस्त्र और पहरावे में (मत्ती 3:4; मरकुस 1:6), वफ़ादारी और काम में (मत्ती 11:11-14; 17:10-13; मरकुस 9:11-13; लूका 1:17) तिशबी जैसा था।

जब पतरस, याकूब और यूहन्ना के सामने हमारे प्रभु का रूप बदल गया तो उसे महिमा की स्थिति में, मूसा और एलिय्याह के साथ चलते और बातें करते देखा गया था (मत्ती 17:3, 4)। निश्चय ही इस विशेष अवसर पर तीनों के इस चुनिंदा समूह में एलिय्याह का दिखाई देना, इस नबी के जीवन की प्रतिष्ठा की कहानी कहता है। परमेश्वर बिना कारण सेवा और महिमा के लिए किसी को कभी अलग नहीं करता।

एलिय्याह पर विचार करना छोड़ने से पहले हम अपने मनों में इस सच्चाई को बिठा लें कि महानता और सच्ची उपयोगिता का छोटा रास्ता कोई नहीं है। एलिय्याह परमेश्वर के साथ-साथ चलने के कारण ''इस्राएल का रथ और सवार'' था। यदि एलिय्याह ने हमें इस संसार में कुछ अलग करने की इच्छा रखने की प्रेरणा दी है तो याद रखें कि हम बाज़ार में निकल कर बदलाव के लिए शोर मचा कर वे बदलाव नहीं ला सकते। लड़ाई खत्म होने से पहले हमें ऐसा करना पड़ सकता है, परन्तु हम सबका पहला कदम अपने दिल के अन्दरूनी किलों में जाकर उन्हें ठीक करना है, क्योंकि परमेश्वर यदि किसी के द्वारा कुछ करना चाहता है तो वह केवल तभी कर सकता है यदि उसका मन सही हो।

सीखने के लिए सबक:
परमेश्वर को संसार में सही प्रकार का बदलाव लाने के लिए बदलने वाले सही लोगों की आवश्यकता है।

टिप्पणियां

[1]ग्यारह आश्चर्यकर्म एलिय्याह के जीवन से जड़े हुए थे: (1) वर्षा को रोकना (1 राजाओं 17:1); (2) कौओं के द्वारा भोजन (1 राजाओं 17:6); (3) भोजन और तेल में बढ़ातेरी (1 राजाओं 17:14); (4) सीदोनी स्त्री के पुत्र को मरे हुओं में से जिलाना (1 राजाओं 17:22); (5) आकाश से आग, जिससे होम बलि लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म हो गई थी (1 राजाओं 18:38); (6) वर्षा के लिए आकाश का खुल जाना (1 राजाओं 18:45); (7) स्वर्गदूत द्वारा एलिय्याह को रोटी पानी दिया गया (1 राजाओं 19:5); (8) आकाश से गिरी आग, जिससे पच्चास लोग भस्म हो गए (2 राजाओं 1:10); (9) आग, जिससे पच्चास और लोग भस्म हो गए (2 राजाओं 1:12); (10) यरदन नदी का जल दो भागों में बंट जाना (2 राजाओं 2:8); (11) एलिय्याह का बवण्डर में से स्वर्ग में चढ़ना (2 राजाओं 2:11)। [2]वे चार काल हैं (1) दस विपत्तियों के द्वारा इब्रानियों का मिस्र की दासता से निकलना, (2) एलिय्याह और एलिशा का समय, (3) हमारे प्रभु का जीवन और (4) प्रेरितों के काम में बताए अनुसार कलीसिया का आरम्भ। [3]जेम्स ई. स्मिथ, *I एंड II किंग्स,* बाइबल स्टडी टैक्स्टबुक सीरीज़ (जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस, 1975), 356.

मसीह में नए लोग

2 कुरिन्थियों में हमें रोमांचकारी, प्रोत्साहित करने वाला संदेश मिलता है कि हमारे जीवन चाहे कैसे भी रहे हों, वे नये बन सकते हैं। जो हारने वाला होता था, अब वह जीतने वाला बन सकता है। जो आत्मिक रूप में मरा हुआ था, वह जीवित हो सकता है। पौलुस ने लिखा, ''सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं'' (2 कुरिन्थियों 5:17)।

परमेश्वर नया व्यक्ति कैसे बनाता है?

पहले तो नया बनाने की परमेश्वर की प्रक्रिया के लिए पाप से अलगाव, या पाप के लिए मरना आवश्यक है (रोमियों 6:1, 2)। अलगाव के इस चरण में मसीह में सच्चे मन से विश्वास करके (प्रेरितों 15:9), अपने पापों से मन फिराकर (1 थिस्सलुनीकियों 1:9) और यीशु को प्रभु और मसीह मानकर (रोमियों 10:10) प्रवेश किया जा सकता है।

दूसरा, मसीह की आत्मिक देह का भाग बनकर परमेश्वर के उद्धार को ग्रहण किया जा सकता है। रोमियों 6:3, 4 कहता है कि यह तब होता है जब व्यक्ति बपतिस्मे में मसीह के साथ गाड़ा जाता है। बपतिस्मे के समय नये मसीह को पाप से छुड़ाकर (रोमियों 6:6, 7) कलीसिया में मिलाया जाता है (प्रेरितों 2:47), जो मसीह के द्वारा जीवित किए गए लोगों की मण्डली है।

तीसरा, नया हो जाने पर व्यक्ति के लिए जीवन के नयेपन में चलना आवश्यक है (रोमियों 6:4)। इस जीवन में नया फल लाना आवश्यक है (रोमियों 6:21, 22; गलातियों 5:16-24)।

कोई भी मसीह में नया व्यक्ति बन सकता है, परमेश्वर हम सबको नये बनाने की उसकी प्रक्रिया को मानने और मसीह में नया जीवन जीने का निमन्त्रण देता है।

कलीसिया के लिए परमेश्वर का नमूना से लिया गया।
एडी क्लोर